जैव विविधता संरक्षण पर केन्द्रित त्रि-नाट्य

बरगद का न्याय

-विनोद मिश्र 'सुरमणि'

जैव विविधता पर केन्द्रित त्रि-नाट्य

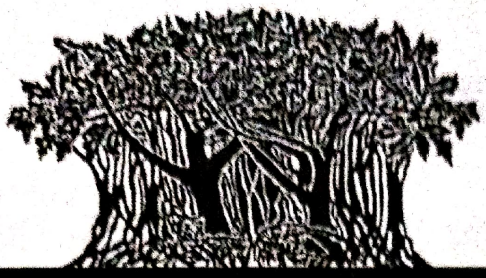

बरगद का न्याय

लेखक

विनोद मिश्र 'सुरमणि'

सम्पादक

जाकिर हुसैन

निर्देशक

सुजाग्रति समाज सेवी संस्था, मुरैना

प्रकाशन सहयोग

म.प्र. राज्य जैव विविधता बोर्ड भोपाल

जैव विविधता पर केन्द्रित त्रि-नाट्य

बरगद का न्याय

लेखक	विनोद मिश्र 'सुरमणि'
सर्वाधिकार	जैव विविधता प्रबंधन समिति पिपरई, मुरैना सुजागृति समाज सेवी संस्था मुरैना (म.प्र.)
प्रकाशन सहयोग	म.प्र. राज्य जैव विविधता वोर्ड, भोपाल
संस्करण	प्रथम 2012
मूल्य	50 रु.
आवरण	मोहन गुप्ता
मुद्रक	माँ शीतला ऑफसेट प्रिन्टर्स, दतिया (म.प्र.)

Bargad Ka Nyay

Writer - Vinod Mishra "Surmani"

म.प्र. राज्य जैव विविधता बोर्ड, भोपाल

संदेश

प्रति,

श्री जाकिर हुसैन

सुजाग्रति समाज सेवी संस्था

मुरैना (मध्यप्रदेश)

यह जानकर खुशी हुई। कि आप जैव विविधता संरक्षण के लिए जन जागरुता एवं प्रचार प्रसार के सशक्त माध्यम नाटक विधा के नाटकों का संग्रह प्रकाशित कर रहें हैं। मैं आपको इस अनुकरणीय कार्य के लिए आपको एवं नाट्य लेखक श्री विनोद मिश्र को बधाई देता हूँ।मुझे विश्वास है कि उक्त नाट्य संग्रह छात्र–छात्राओं तथा रंग कर्म से जुड़े व्यक्तियों के लिए उपयोगी होगा साथ ही जैव विविधता संरक्षण कार्य में महत्वपूर्ण योगदान देगा।

प्रबंधक

(प्रोजेक्ट)

म.प्र. राज्य जैव विविधता बोर्ड, भोपाल

बरगद का न्याय

लेखक – विनोद मिश्र 'सुरमणि'

पात्र परिचय

बरगद	–	जंगल का राजा
नीम	–	मंत्री
पेंदू/तेदू	–	सैनिक
पीपल	–	परम पूज्य गुरूदेव
मानव	–	लकड़हारा
तोताआम	–	नर्तक
नट/नटी	–	सूत्रधार

विनोद मिश्र "सुरमणि"

लेखक परिचय

दतिया राजघराने के वरिष्ठ चित्रकार पं. नारायण दास शर्मा के प्रपौत्र विनोद मिश्र का जन्म कला एवं साहित्य से जुडे परिवार में 22 जुलाई 1966 को दतिया में हुआ । संगीत की शिक्षा आपने अपने पिता प्रसिद्ध संगीतज्ञ (तबला वादक) पं. श्री महेश कुमार मिश्र 'मधुकर व बड़े भाई मनोज मिश्रा 'तालमणि' से प्राप्त की। लोक वाद्य कींगड़ी को आपके पिता ने परिस्कृत कर 'स्वरकिन्नरी नाम दिया उसी से संगीत की शिक्षा प्रारम्भ हुई । बाद में वायलिन वादन शुरू किया। प्रयाग संगीत समिति इलाहाबाद से प्रभाकर व विक्रम विश्वविद्यालय उज्जैन से संगीत में मास्टर डिग्री हासिल की । सन् 1990 में सुर सिंगार संसद मुम्बई के आयोजन स्वामी हरिदास संगीत सम्मेलन में सुप्रसिद्ध वायलिन वादक डॉ. आर.पी. शास्त्री ने 'सुरमणि' की उपाधि से अलंकृत किया।

विशेष भागीदारी :-

- अन्तर्राष्ट्रीय ड्रामा फैस्टीबल कटक उड़ीसा 2002
- अखिल भारतीय नाट्य समारोह पटना, शिमला, कोलकाता, जबलपुर, छपरा, कटक, लखनऊ, भोपाल में प्रस्तुत नाटकों का संगीत निर्देशन।
- उडीसा, तमिलनाडू, मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश राज्यों के कई राष्ट्रीय युवा महोत्सवों में शिरकत।
- बुन्देली नाटकों हरदौल, रायप्रवीण, कुंजा का भात, नाटक जारी है, वीर छत्रसाल, रानी गणेश कुंवर, केसरदेई एवं सुन्दरिया का संगीत निर्देशन।

पुरस्कार :-

- सुरमणि – सुरसिंगार, संसद बम्बई 1990
- सर्वश्रेष्ठ निर्देशन छतरपुर 1991
- 6वाँ अ0भा0 कला संगम, भोपाल 1993
- सर्वश्रेष्ठ नाट्य संगीत निर्देशन, पटना 1996–2006
- दतिया रत्न 2001, मंचालंकार महोबा 2006
- सर्वश्रेष्ठ कर्मचारी का सम्मान गणतंत्र दिवस 2006–2008
- चन्द्र सम्मान 2012

रचनात्मक कार्य :-

- करीब 30 लघु नाटकों का लेखन।
- हस्तलिखित काव्य संग्रह **लिखनार** का सम्पादन।
- दूरदर्शन भोपाल से प्रसारित नौटंकी–"नाटक जारी है" का संगीत निर्देशन

पता:-संगीत गुरूकुल मधुकर मार्ग, पकौडिया महादेव,दतिया (म.प्र.) मो. 9893437616